DOI: https://doi.org/10.37547/supsci-ojp-04-01S-46 Pages: 384-390

Oriental Journal of Philology

ORIENTAL JOURNAL OF PHILOLOGY

journal homepage:
http://www.supportscience.uz/index.php/ojp/about

स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ और पाश्चात्य प्रभाव

डॉ. सूर्य कुमारी. पी
हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय,
हैदराबाद विश्वविद्यालय,
हैदराबाद-500046,
मो.नं-9652425545
ई.मेल-suryakumariharshita@gmail.com

TRENDS AND WESTERN INFLUENCE OF POST-INDEPENDENCE INDIAN LITERATURE

Dr. Surya Kumari. P
Research intern in Hindi Department,
School of Humanities,
University of Hyderabad,
Hyderabad-500046,
Mob.No.-9652425545
E-mail-suryakumariharshita@gmail.com

Abstract

"The influence of Western literature is evident in the backdrop of the development of various trends in Indian literature. Indian literary creativity is shaped by Western ideologies. However, the reality is twofold: while the influence of India's earlier literary traditions, such as Sanskrit, Pali, and Prakrit languages is apparent in modern Indian literature, there's also a discernible impact of European and American literary thought despite the end of colonial rule. This article aims to highlight the Western influence on the characteristics of post-independence Indian literature, focusing on three main languages: Sanskrit, Hindi, and Telugu."

Key words:

Indian literature, Sanskrit language, modern Indian languages, post-colonial works, impact of globalization, European influence, creative literary creation and indigenous modernity.

संक्षिप्ति

भारतीय साहित्य की विविध प्रवृत्तियों के विकास की पृष्ठभूमि में पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय साहित्य की सृजन धर्मिता पाश्चात्य चिंतन से प्रभावित होती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ विकसित भारतीय साहित्य पर भारत की ही पूर्व साहित्यिक परंपराओं अर्थात संस्कृत, पाली, प्राकृत भाषाओं की परंपराओं का प्रभाव जहाँ एक ओर दिखायी देता है वहाँ दूसरी ओर उपनिवेशवादी शासन के समाप्त हो जाने के बावजूद कुछ यूरोपीय और अमेरिकी साहित्यिक चिंतन का प्रभाव भी दिखाई देता है। प्रस्तुत आलेख में भारत की प्रधान तीन भाषाओं संस्कृत, हिन्दी और तेलुगु के आलोक में स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य की विशेषताओं पर पाश्चात्य प्रभाव को रेखांकित करने की कोशिश की गयी है।

बीज शब्द

भारतीय साहित्य, संस्कृत भाषा, आधुनिक भारतीय भाषाएँ, उत्तर उपनिवेशवादी रचनाएँ, भूमण्डलीकरण का प्रभाव, यूरोपीय प्रभाव, वादपरक साहित्य सृजन और देशीय आधुनिकता।

प्रस्तावना

[भारतीय समाज में 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना के बाद भारत और पाकिस्तान दो देशों के रूप में हुआ था। 1947 से लेकर 1949 तक भारत में देशी राज्यों का भारत राज्य में विलयन हुआ था। 1949 में भारतीय संविधान का निर्माण हुआ था। 26 जनवरी 1950 को भारतीय गणतंत्र की घोषणा की गयी थी। स्वतंत्रता के बाद लग-भग 10 वर्ष के बाद नक्सलवादी आन्दोलन का प्रारंभ हुआ था। फिर भारत में अलग-अलग सामाजिक समुदायों में अपनी-अपनी अस्मिताओं को लेकर सोच का विकास शुरु हुआ था। 1980 के आस-पास वैश्विक धरातल पर रूस का पतन हुआ था और 1990 में यूरोप का एकीकरण। 1991 से भारत में सुधार होने लगे और वैश्वीकरण की प्रक्रिया का आरंभ हुआ। इन मुख्य परिवर्तनों के आलोक में पिछले 75 वर्षों में अर्थात स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य में विभिन्न प्रवृत्तियों का विकास हुआ था। स्थूल रूप में भारतीय रचना धर्मिता को ये घटनाएँ प्रभावित कर रही थी। आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास लग-भग एक हजार साल पहले हुआ था। तब से लेकर आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रवाहमान चिंतन धारा पूर्ववर्ती संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त चिंतन परंपरा को ग्रहण करती है। फिर इसके साथ-साथ यह चिंतन धारा इन हजार वर्षों में इस्लाम और यूरोपीय चिंतन से प्रभावित होती है। इस पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता के बाद विकसित भारतीय साहित्य की सृजनात्मकता या भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ वैश्विक और स्थानीय परंपराओं से ग्रहण करती हुई विकसित होती है। भारतीय रचनाकारों ने

स्वतंत्रता के बाद वैश्विक और स्थानीय धरातल पर विकसित प्रवृत्तियों के अनुकूलन और सामंजस्य के बल पर अपने साहित्य की सृष्टि की।]

सैद्धांतिक धरातल पर स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ एक तरह से उत्तर उपनिवेशवादी लेखन की प्रवृत्तियाँ हैं। प्रो. के. आर. श्रीनिवास अयंगर ने 1962 में लिखा था- "It is the unique role of Indo-Anglian literature both to drive from and to promote an all-India consciousness. To put it another way, we should expect Indian writing and in English rather than any of the regional literatures- to project a total vision of mother India, interpreting her aspirations and hopes… not only before the outside world, but also before the diverse linguistic groups within the country, and thereby promote a sense of 'national identity'" **1**… यह बात भारतीय भाषाओं के साहित्य पर भी लागू होती है। भारतीय लेखक स्वातंत्रोत्तर समय में उपनिवेशवादी अपराध बोध से बाहर आकर राष्ट्र की दृष्टि से सोचने लगे। भारत के सांस्कृतिक लक्ष्य धर्म निरपेक्षता, सामाजिक सांस्कृतिक, स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद के दिनों में भारतीय लेखकों के लिए प्रेरणादायक थे। इसके अलावा भारतीय प्रादेशिक भाषागत संस्कृतिगत भिन्नताएँ उदार सांस्कृतिक सोच के बल पर भारतीय भाषाओं में प्रकट होने लगीं।

स्वतंत्रता के बाद भारत में आधुनिकता का एक नया दौर प्रारंभ हो गया था। हिन्दी और तेलुगु भाषाओं में आधुनिकता का पहला दौर वह था जो युग-पुरुष हिन्दी के रचनाकार भारतेन्दु और तेलुगु के रचनाकार वीरेशलिंगम का समय था। उस समय भारत में पुनर्जागरण पर बल दिया गया था। उस समय भारतीय मध्यवर्ग ने सुधार का नारा लगाया था। आधुनिकता का दूसरा दौर हिन्दी में छायावादी और तेलुगु में भाववादी काव्यधाराओं से प्रारंभ होता है। ये दोनों धाराएँ यूरोपीय रोमांटिजम से प्रभावित थे **2**। उस समय की सृजनधर्मिता में व्यक्तिपरक यथार्थ भावुकता और रोमांटिक प्रवृत्ति को प्रधानता मिली।

भारत में आधुनिकता का तीसरा दौर प्रारंभ होता है स्वतंत्रता के बाद। स्वतंत्रता के बाद भारतीय रचनाकारों की सृजनधर्मिता और बौद्धिकता को क्रमशः भारतीय सामाजिक आन्दोलनों से बल मिलने लगा। इस तरह से इस आधुनिकता को भारत में यूरोप के प्रभाव के रूप में ही स्वीकार किया गया है **3**। क्योंकि उपनिवेशवाद के विकास के साथ-साथ भारत में शिक्षित नये मध्यवर्ग का भी विकास हुआ था। भारतीय साहित्यकार इसी शिक्षित नये मध्यवर्ग से आते हैं और भारत के व्यक्ति सत्य को व्यापक वैश्विक प्रभावों के अधीन स्वीकार किया गया है।

इस संदर्भ में दूसरी ओर आलोचक देशीय आधुनिकता की भी चर्चा करते हैं। भारत पर मार्क्सवाद के प्रभाव के कारण व्यक्ति चेतना के साथ-साथ हिन्दी की प्रगतिवादी कविता और तेलुगु की अभ्युदय कविता में वर्ग की चेतना की भी चर्चा होने लगी। 1968 में विकसित नक्सलवादी आन्दोलन में वर्ग चेतना के आलोक में ही भारतीय साहित्य प्रभावित हुआ। तो क्रमशः हिन्दी में जनवादी और नव जनवादी और तेलुगु में क्रांतिकारी काव्यधाराओं का विकास हुआ था। 1960 के बाद भारतीय साहित्य में एक विशेष प्रकार की लोक संपृत्ति दिखाई दोती है। इसके फलस्वरूप भारतीय दृष्टि से अपने-अपने सामाजिक समुदायों के जीवन से और जमीन से जुड़ ने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे विकसित होने लगी। 1980 तक आते-आते यूरोप और अमेरिका के चिंतन के कुछ पहलुओं के बल पर नारीवादी और दलितवादी चिंतन का विकास होने लगा।

1980 के बाद हिन्दी और तेलुगु साहित्य क्षेत्रों में नारीवाद और दलितवाद उभरने लगा। फिर 1990 के बाद सूचना प्रौद्योगिकी के बल पर वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया विकसित होने लगी। बाजारवाद का प्रभाव भी भारतीय साहित्य पर पड़ा। इसलिए नव उपनिवेशवाद, नव सांस्कृतिकवाद और डिजिटल युग के संचार क्रांति के आलोक में भारतीय साहित्य में भी ग्लोबल संस्कृति का विकास होने लगा। हिन्दी में कुमार अंबुज, मंगलेश डबराल की कविता में बाजारवाद की स्थितियाँ और उनके द्वारा उपलब्ध सुख सुविधाओं की ओर ध्यान दिया गया है **4**। हिन्दी उपन्यासों में अलका सरावगी का 'शेष कादम्बरी', सुरेन्द्र वर्मा का 'मुझे चाँद चाहिए' में भूमण्डलीकरण की वास्तविकताओं का उल्लेख दिखाई देता है।

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'कहीं ईसुरी फाग' में लोक जीवन पर आधारित भूमण्डलीकरण के आयामों का उल्लेख किया गया है। रवीन्द्रवर्मा ने 'मैं अपनी झांसी नहीं दूँगा' में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया की प्रस्तुति की गयी है। काशीनाथ सिंह के 'रेहन पर रग्घू' राजु शर्मा के 'विसर्जन', कुनाल सिंह के आदिग्राम उपन्यास भी भूमण्डलीकरण के अलग-अलग आयामों का उल्लेख करना वाले उपन्यास हैं। आदिग्राम उपन्यास में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भूमि अधिग्रहण की समस्या पर प्रकाश डाला गया। कमल कुमार का उपन्यास 'पासवर्ड' में अमेरिकीकरण की विशेषताएँ दिखाई देती है। पंकज बिष्ट ने 'पंखवाली नाव में' पुरुष समलैंगिकता का चित्रण किया है। गीतांजली चटर्जी ने 'तीसरे लोग' में भूमण्डलीय अपसंस्कृति का परिचय दिया है।

हिन्दी के बाद तेलुगु भाषा भारत में अधिक संख्यक लोगों के द्वारा बोली जाती है। मूल रूप से हिन्दी उत्तर भारत की भाषा है। तेलुगु दक्षिण भारत की भाषा है। 1956 में पूरे भारत का भाषावार राज्यों ने विभाजन किया गया था। तेलुगु भाषी प्रदेश के रूप में आन्ध्रप्रदेश राज्य की स्थापना हुई थी। लेकिन 2014 में प्रादेशिकता की अस्मिता को लेकर आन्दोलन चलने पर तेलुगु भाषी राज्य का विभाजन दो राज्यों में हो गया था- आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना। तेलुगु भाषी प्रदेश के रचनाकारों में श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री की रचनाओं में यह बताया गया है कि भिन्न जातियों का विकास ही एकता है और उसकी पूर्णता ही भारतीयता है। वे कहते हैं कि तेलुगु भाषी जनता में प्रादेशिकता के स्तर पर एकता हो और राष्ट्रीयता के स्तर पर भारतीयता हो। इस तरह से श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री ने स्पष्ट किया था कि तेलुगु भाषी लोगों को अपनी प्रादेशिक अस्मिता का भी आदर करना चाहिए और हिन्दी, बंगाली जैसे अन्य संस्कृतियों का अनुकरण नहीं करना चाहिए। श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री जी ने तेलुगु भाषी जनता की संस्कृति में फैली हुई प्रादेशिक उप सांस्कृतिक स्तरों को भी पहचाना। इसके विपरीत विश्वनाथ सत्यनारायण जैसे लेखकों ने तेलुगु भाषी जनता की संस्कृति और हिन्दू संस्कृति में भिन्नता को स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं कि हिन्दू संस्कृति ही आन्ध्रों की संस्कृति है।

स्वतंत्रता के बाद एक भाषा और समान संस्कृति के नाम पर भाषावार राज्यों का घठन हुआ था। इसी तरह से तेलुगु भाषी लोगों के लिए आन्ध्र प्रदेश का घठन हुआ था। इसके बाद आन्ध्र प्रदेश में अलग-अलग सामाजिक बीच में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के नाम पर मत भेद सामने आये। विभिन्न जातियों, वर्गों की सामाजिक स्थितियों में अंतर के कारण प्रादेशिक संस्कृतियों और उपसंस्कृतियों की पहचान की दृष्टि से अलग-अलग सामाजिक साहित्यिक आन्दोलन होने लगे। कालुव मल्लय्या, चंद्रलता के उपन्यासों में बम्मिडि जगदीश्वर राव, गंटेडु गौरुनायुडु, दग्गुपाटि पद्माकर, वी. चंद्रशेखर राव, बी. एस. रामुलु की कहानियों में तेलुगु भाषी समाज की समकालीन समस्याएँ दिखाई देती हैं। नागावळी की कहानियाँ उत्तर आन्ध्र के

तेलुगु भाषी समाज का चित्रण करती है। बोग्गु पोरल्लो कहानी संग्रह में तेलंगाना ग्रामीण जीवन और संस्कृति का चित्रण किया गया है।

1980 के बाद तेलुगु भाषी समाज में नयी मध्यवर्गीय संस्कृति का विकास हुआ तो स्त्री- पुरुष संबंधों को नारीवादी दृष्टि से देखते हुए साहित्य का सृजन किया गया है। वोल्गा, सत्यवती, भार्गवी राव, वरलक्ष्मी, कोंडेपूडि निर्माला की रचनाओं में नारीवादी दृष्टि दिखाई देती है। कुछ लेखिकाओं ने दलित नारी समस्याओं का भी चित्रण किया है।

स्वतंत्रता के बाद आदिवासी और दलित जीवन में बदलाव आया। भारतीय दलित वर्ग में शिक्षा के बल पर अपने अस्तित्व की पहचान की चेतना विकसित हुई। डॉ. बी. आर. अंबेडकर के चिंतन के आलोक में दलित साहित्य भारतीय भाषाओं में लिखा जाने लगा। इस साहित्य पर कहीं ऑफ्रो-काली जातियों का आन्दोलन का प्रभाव भी दिखाई देता है। दलित साहित्य में भारतीय दलित वर्गों की आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की सच्चाइयों का परिचय मिलता है। दलित लेखन, कथा साहित्य और कविता के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगा। तेलुगु भाषा में एनडुलूरि सुधाकर, नागप्प गारि सुंदर राजु, चिलुकूरी देवपुत्रा, गोरेटि वेंकन्ना उल्लेखनीय।

8वें दशक के आस-पास दलितों के साथ-साथ बहुजनों अर्थात भारत के पिछड़े हुए सामाजिक वर्गों में भी अस्मिता मूलक चेतना का विकास हुआ। फिर अल्पसंख्यकों के नाम पर पहचाने जाने वाले इस्लाम धर्मावलंबी रचनाकारों के द्वारा भी साहित्य सृजन होने लगा। सामाजिक असमानताओं और विभिन्न सामाजिक समुदायों के दबाओं के नाम पर भारत के अलग-अलग सामाजिक वर्ग अपनी-अपनी समस्याओं को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने लगे। इसके अलावा प्रादेशिक असमानताओं के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रभावों के अधीन भी भारतीय साहित्य का सृजन होने लगा। अल्पसंख्यकों और बहुजनों की रचनाओं में मुहम्मद खादिर बाबु, शेख़ करीमुल्ला, सलीम और बहुजनों की रचनाओं में बी. एस. रामुलु, बोय जंगय्या, तुम्मल रामकृष्णा की रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

1980 के बाद भारत में नये मध्य वर्ग का विकास हुआ था। उन्होंने उच्चतरीय शिक्षा ग्रहण की फलतः भारत की युवा पीढ़ी भारत के एक दूसरे राज्य में ही नहीं विदेशों में भी फैल गये। यह लोग अमेरिका इंग्लैंड या यूरोप के अन्य देशों में जाकर बस गये। यह पीढ़ी विदेशी संस्कृति से सामंजस्य स्थापित करती हुई प्रवासी जीवन विदेशों में बिता रही है। अब ये लोग भी प्रवासी जीवन को लेकर साहित्य का सृजन करने लगे। चंद्रलता के उपन्यास और नारायण स्वामी के द्वारा लिखित 'रंगुटद्दाल किटिकी' कहानी संग्रह इस दिशा में उल्लेखनीय है।

स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियों का एक और आयाम वादपरक चिंतन के प्रभाव को भी दिखाता है। उदाहरण के लिए हिन्दी में मार्क्सवाद, गांधीवाद, फ्रायडवाद के प्रभाव में यशपाल, नागार्जुन, भैरव प्रसाद गुप्त, जैनेन्द्र ने लिखा था। आंचलिक जीवन चित्रण करनेवाले फनीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, उदयशंकर भट्ट जैसे रचनाकार भी उल्लेखनीय है। विनोद कुमार शुक्ल, अमृत लाल नागर प्रमुख लेखकों ने भारतीय मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण किया था। भारत के इतिहास और प्रागैतिहासिक जीवन चित्रण करने वाले वृंदावनलाल वर्मा, चतुर्सेन शास्त्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, विश्वंभरनाथ उपाध्याय भी उल्लेखनीय है **5**।

स्वतंत्रता के बाद लिखित भारतीय साहित्य पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के साथ-साथ यूरोप और अमेरिका का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज के अंतर्गत सामाजिक समुदायों में गतिशीलता दिखाई देती है। इसलिए भारतीय साहित्य अस्मिता मूलक चिंतन ने कई प्रभावों को स्वीकार करते हुए अपनी सृजन धर्मिता का निर्माण कर रही थी। भारतीयों के प्रवासी अनुभव, भारतीय समुदायों के अस्मिता मूलक संघर्ष और भूमण्डलीकरण के प्रभाव के अधीन, भारतीय साहित्य की सृजन धर्मिता निम्नलिखित दिशाओं में विकसित हो रही है।

1. पाश्चात्य, मुख्य रूप से यूरोप और अमेरिका में विकसित मार्क्सवाद, फ्रायडवाद, संरचनावाद आदि वादों के प्रभावों के अधीन लिखित साहित्य।
2. नारीवाद, दलितवाद, अल्पसंख्यकवाद, बहुजनवाद जैसे यूरोप और भारतीय प्रभावों के अधीन लिखित साहित्य।
3. भारत के विभिन्न राज्यों के सामाजिक, सांस्कृतिक उपस्तरों की संघर्ष की पृष्ठभूमि में विकसित प्रादेशिकतावाद।
4. विदेशों में रहनेवाले प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष का साहित्य।

इसके अलावा वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भारतीय जीवन पर पड़नेवाले प्रभावों का भी चित्रण हिन्दी, तेलुगु भाषाओं में होने लगा।

समग्रतः स्वतंत्रता के बाद संस्कृत भाषा में भी साहित्य का सृजन होने लगा। वर्तमान समय में संस्कृत भाषा भारत के सामान्य सामाजिक व्यवहार भाषा नहीं है। फिर भी संस्कृत भाषा में राष्ट्र नेताओं के जीवन पर आधारित रचनाएँ, संत और ऐतिहासिक महापुरुषों की जीवनी पर आधारित रचनाएँ दिखाई देती है। आध्यात्मिक विषयों पर व्याख्याएँ, निबंध लेखन, शास्त्रीय विषयों पर लेख भी संस्कृत भाषा में भी दिखाई देते हैं। कुल मिलाकर हिन्दी, तेलुगु और संस्कृत भाषाओं में लिखित स्वातंत्रोत्तर भारतीय साहित्य भारतीय जीवन पर पड़नेवाले पाश्चात्य प्रभावों और भूमण्डलीकरण के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. The Indian Contribution to English Literature-K.R. Srinivasa Iyengar-First Edition-1947, Karnataka Publishing House. Bomby.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक -डॉ. नगेन्द्र, 2018, नई दिल्ली।
3. स्वच्छदतावादी काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, लेखक- पी. आदेश्वर राव, प्रगति प्रकाशन आगरा, 1972.
4. आधुनिकता बोध आधुनिकीकरण-रमेश कुंतल मेघ, अक्षर प्रकाशन,1969.
5. प्रतिनिधि कविताएँ-कुमार अम्बुज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास-संपादक- डॉ. नगेन्द्र, नई दिल्ली, 2018.
7. तेलुगु साहित्य का इतिहास-लेखक- श्री. बालशौरि रेड्डी, हिन्दी समिति- लखनऊ, प्रथम संस्करण-1964.
8. हिन्दी कविता को आन्ध्रों की देन- आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद, मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1985.

9. बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य- डॉ. आई.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली, 2003.